उधार का स्वर्ग

– मनमोहन

(चार नट–नटियों का नाचते–ठुमकते प्रवेश, पहले दो फिर तीसरा फिर चौथा)

1. आओ भाई–आओ भाई
   पिछला सब बिसराओ भाई
   हिल मिल मंगल गाओ भाई
   (दोनों) आओ भाई आओ भाई
2. बीती रात कमल दल फूले
   तन के ऊपर तमगे झूले
   शोहदे फिरते फूले–फूले
   डांस करें मटकायें कूल्हे
   (दोनों) जीभ टटोले दूध मलाई
   आओ भाई आओ भाई
3. तस्कर आये अमले लाये
   लूटखोर ने पैर जमाये
   आई एम एफ ने मारी आंखें
   कौओं ने खुजलाई पांखें
   (तीनों) मंहगाई ने ली अंगड़ाई
   आओ भाई आओ भाई
4. मारे खाएं हाथ न आएं
   कमजोरों को आंख दिखाएं
   अपनी दुनिया को चमकाएं
1. मौका है कुछ चांदी कूटें
   फसल खड़ी है जम कर लूटें
2. इसे खिलाएं उसे हटाएं
   इसे गिराएं उसे भगाएं
3. इनसे उनसे बात चलाएं
   नई कार का नम्बर लाएं
   मुन्ने को साहब बनवाएं
   बहती गंगा जल्दी नहाएं
4. कभी डिस्को में जाएं/जांए
   (चारों) कभी होटल में खाएं/खाएं
   (चारों) वर्ल्ड बैंक ने पैंठ जमाई
   आओ भाई आओ भाई (चारों जाते हैं)

पहला दृश्य

(छोटे–मोटे होटल का दृश्य)

एक : ऐ छोटू, दो गिलास लैये फटाफट..... और हां सामने की दुकान से गरमा–गरम मच्छी के पकौड़े ले आ मेरा नाम ले दियो.....
(अखबार पढ़ते हुए अटक–अटक कर.....)
कुंभ में भगदड़ में सौ मरे सौ घायल.....काली हांडी में भूख से पच्चीस मरे.....(चेहरा कुछ बिगड़ता है

और हर खबर पढ़ते हुए ऊब और वितृष्णा से ज्यादा बिगड़ता है) मेरठ में दो समुदायों में दंगा.....स्कूल की छत गिरी .....नव युवती ने तीन बच्चों के साथ कुंए में छंलाग लगाई छि.....छि..... होशियारपुर में कर्जे में डूबे किसान द्वारा आत्महत्या..... ट्रक और स्कूटर की भिड़ंत....फेल हुए छात्र द्वारा अपने जीवन का अन्त. .... बच्चे का अपहरण.....मरा बटां नै सारा मूड खराब कर दिया इन अखबारों में कोई खबर न होती मेरे यार.....हां....करिश्मा और सलमान का चक्कर चला (आंखें चमकती हैं) हां ये कोई बात हुई.....

दो : (अखबार छीन कर) क्यों खोपड़ी खराब कर रहा है, माल निकाल, हर वक्त अखबार चाटता रहता है, दिल्ली चल रहा है मेहरोली चलेंगे कुछ ऐश करेंगे.....(दोनों तबला सा बजाते हुए) किसी डिस्को में जाएं किसी होटल में खाएं–खाएं.....कहीं घूम के आए हम..... (जल्दी–जल्दी) नांगलोई में कातिल हसिना नशीली रातें लगी हैं–देखेगा....वो कैसेट मैंने भिजवाया था देखा–क्या टंच फिल्म है।

(दूसरा उंगली से इशारा करके जैसे कहता है क्या खूब। गिलास आ जाते हैं।)

एक : (अंटी से अद्धा निकालता है, पहले पिस्तौल निकलता है जिसे वह बीच में रख देता है।) ओये तेरी सी एल ओ का क्या हुआ .....ये खटारा मारूती का पिंडा कब छोड़ेगा.....

दो : छोड़ दिया समझ .....परसों नई गाड़ी पहुंच जाएगी....सैक्टर वाला प्लाट बिकवा दिया है....दूसरा अगले हफ्ते बिक रहा है....तीसरा उससे अगले और चौथा उससे अगले (दोनों हंसते हैं) (फिर से) किसी डिस्को में जाएं किसी होटल में खाएं–खाएं जल्दी से माल निकाल यार.....

एक : क्यों बे तरी चीज़ (चीज़ पर जोर देकर) का क्या हाल है (दो क्या खूब का वही इशारा करता है) साला पूरा हरामी है। कभी हमें भी याद कर लिया कर।

(इस बीच भीख मांगता कोई भिखारी आती है.... दोनों भाग–S कहके लात दिखाते हैं)

तीसरा और चौथा आते हैं। ब्रीफ केस लिए या बैग दबाए खाये पिये गृहस्थ अधेड़ थोड़ा दूर बैठ जाते हैं।

(ऊपर के दृश्य में काम करता छोटू दोनों को बीच–बीच में आश्चर्य और डर से देखता पाया जायेगा। पहले दोनों प्रापर्टी डीलर नुमा अपराधी और अय्याश किस्म के नवयुवक हैं।(नकली) सोने की जंजीर या अंगूठी या खुले बटन या कड़ा आदि से उनकी लंपटता का संकेत किया जा सकता है।)

तीसराः (बैठते ही) कुर्ते से हवा करते हुए.....ऐ छोटू भाग के पानी ला और पंखा नहीं चलाया.....(चौथे से) तुम्हारी पॉलिसी तो मैच्योर हो गई होगी, अब निकाल लो बहुत बेवकूफी कर रहे हो, कब से कह रहा हूं शेयरों में इनवेस्ट करो....(कनखियों से बारी–बारी से पड़ौस में बैठे मूंछ मरोड़ते नौजवानों की ओर देखते हैं जो अब पांव चौड़ाए अधलेटे हैं। फिर पिस्तौल, फिर अद्धा...आपस में नजरें मिलाते हैं कुछ परेशान और सहमे हुए....)

(तीसरा आवाज धीमी करके लगभग गुर्राने के अन्दाज में जारी रखता है।)

.....पूरे बेवकूफ आदमी हो कब से कह रहा हूं शेयरों में इनवेस्ट करो.....क्या इन्ट्रेस्ट मिल रहा है वहां दस परसेंट, 12 परसेंट! मकान खाली करा लिया! (चौथा हामी भरता है) प्लॉट का क्या किया?

चौथा : (जांघ खुजाते हुए) अगले हफ्ते हो जाएगा....उससे अगले हफ्ते दूसरा भी हो जाएगा.....

तीसराः अच्छा (तारीफ करते हुए) छुपे रुस्तम हो, अच्छा है.....काम आएगा.... रेट बढ़ने वाले हैं जल्दी करना...

चार : वो तो तीसरा भी हो जाए..... वो लुगाई कुछ ज्यादा ही सर चढ़ रही है। उसका कुछ इंतजाम जल्द करना पड़ेगा। (पड़ोसियों की ओर आंख से इशारा करते हुए) इनसे कुछ बात करें.....

तीन : (रोक कर चुप रहने का इशारा करते हुए) जो कुछ करना है जल्दी करो रेट बहुत बढ़ने वाले हैं।

पृष्ठभूमि से कोरस की आवाज (धीरे–धीरे समवेत)

जल्दी करो जल्दी करो जो कुछ करना है जल्दी करो
रेट बढ़ने वाले हैं जल्दी करो
कल सनसेक्स चढ़ने वाला है जल्दी करो
परसों गिर जायेगा फिर न कहना बताया नहीं
तेजड़िये आने वाले हैं मन्दड़िये जाने वाले हैं जल्दी करो

तिलहन उछलने वाला है सोना बरसने वाला है जल्दी करो
जल्दी करो फिर न कहना बताया नहीं
मौका है निकल जायेगा गाड़ी है छूट जायेगी
फिर न कहना बताया नहीं
लोगो डरो नहीं जो कुछ करना है अभी कर लो
जिसे ठिकाने लगाना है जल्दी लगाओ
फिर न कहना बताया नहीं
जल्दी करो जल्दी करो

दूसरा दृश्य

पात्र : **मंत्री :** जाहिल, लालची, घाघ, अनुभवी सत्ताधारी
MNC प्रमोटर : हिन्दुस्तानी दलाल (ब्रोकर), चन्द्रास्वामीनुमा रूद्राक्ष, केसरिया पटका, माथे पर बिंदा
वर्ल्डबैंक/आइएमएफ प्रतिनिधि : चुस्त–दुरूस्त, नपा–तुला, लक्ष्य पर पैनी नजर (एक सहायक के साथ) प्रोफेशनल प्रोफाइल
सैक्रेटरी : घाघ नौकरशाह, पढ़ा–लिखा, चतुर–चालाक, इंतजामी, संकट मोचक, तुरंत बुद्धि
(मंत्री, सैक्रेटरी और तीन–चार छोटे नौकरशाहों का अलग–अलग तरफ से प्रवेश)

मंत्री : जल्दी करो, आने वाले हैं

सैक्रेटरी : (छोटे नौकरशाहों से) कमबख्तो, जल्दी करो। (बदहवासी और हडबोंग का दृश्य, सब लट–पट सम्हलते, चश्मे सम्हालते हैं, फाइलें काख में दबाते हैं, इधर–उधर दौड़ते हैं, हांफते हैं।

सक्रेटरी : जल्दी करो, जल्दी.....(कतार में खड़ा करता है, मंत्री को छोड़ सभी के खड़े होने की मुद्राएं निर्धारित करता है.....)
(प्रमोटर का प्रवेश, बांहें खोले मंत्री से भरत मिलाप, गले मिलते हैं)

प्रमोटर : कैसे हैं, मजे में हैं, खुश हैं। पी.एम. कह रहे थे गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम देकर उन्होंने आपकी गरीबी तो दूर कर ही दी। क्यों ठीक है ना.....(दोनों हो हो कर हंसते हैं)
(सक्रेटरी से) बस आने वाले हैं, सब तैयारी है ना.....

सक्रेटरी : जी,

दरबान (दो हो सकते हैं) : बामुलाहिजा होशियार.....सुनो सुनो सभी सुनो कान खोलकर (श्रोताओं की ओर घूमते चक्कर लगाते हुए) सांस रोककर दिल थाम कर सुनो–नई दुनिया के बेताज बादशाह, नई विश्व व्यवस्था के परवरदिगार, धन–धरती–समुद्रों–असामानों के अधिपति मालिकों के मालिक, शस्त्रागारों के स्वामी, अन्नदाता, कर्जदाता, धनकुबेर, ग्लोबल विलेज के दबंग सरपंच, उधारीकरण के उन्नायक, सफाया अभियान के संचालक, दुष्टों के दलन कर्ता, गरीबों और गरीबी के दुश्मन और गरीब देशों के मसीहा, गरीब परवर, ग़ौरांग महाप्रभु आ रहे हैं.....
(फंड बैंक का प्रतिनिधि मि. एक्स चुर्रुट दबाए जेब में हाथ डाले सहायक के साथ आता है। प्रमोटर के अलावा सब दुहरे होकर हाथ जोड़ते हैं, मंत्री पीछे जाते हुए तीन बार जुहार करता है। मि. एक्स सबको प्रणाम करता है, (श्रोताओं को भी चारों ओर घूमकर।) फिर कतार में खड़े सभी से वरीयता के क्रम में हाथ मिलाता है, प्रमोटर उसके साथ–साथ मध्यस्थ की तरह, परिचय सा कराने का अभिनय करता हुआ।)

मि. एक्स (मंत्री से) : कैसा है? अच्छा है। लेकिन हमारा बहुत शिकायत है हम तुम्हारे पी.एम. को बोला–आपका यहां अच्चा नहीं। बहुत धीमा है, बहुत गड़बड़ है। (मंत्री घबड़ाता है)

प्रमोटर : सर, आपने बिल्कुल ठीक फर्माया। पर अब इन्होंने कसम खा ली है कि जब तक इकोनोमी का लिबरलाइजेशन, इन्डस्ट्री का प्राइवेटाइजेशन, (सक्रेटरी हाथ जोड़ता है) : प्रायसिसका

रैशनलाइजेशन, डिसइनवेस्टमेंट, मॉडर्नाइजेशन.....

मि. एक्स : वो हम बहुत सुना चुका है, आपका यहां बहुत गड़बड़ है, बहुत धीमा है, आप लोग बहुत टाइम लगाता है, बहुत गड़बड़ करता है, हमारे पास इतना टाइम नहीं। हम बहुत नाराज़ हैं। आप कमिट किया, हम आपको न्यूक्लियर डील देना बोला, आप टाइमटेबल को फोलो नहीं किया।

मंत्री : (माथे पर हाथ मारते हुए) सरकार क्या बतायें, ये कम्बख्त कम्यूनिस्ट जी का जंजाल बने हुए हैं, न निगलते बनते हैं न उगलते।

मि. एक्स : (व्यंग्य से) वो हम देखेगा, बट यू आर होपलैस .....

सक्रेटरी : नहीं सर, बस चुनाव हो जाएं। अब तेजी से उधारीकरण मेरा मतलब उदारीकरण का काम चलेगा सर। चाहे कुछ भी हो जाए सर। सर, ये देखिए सर ये सब कैबिनेट में पास हुआ पड़ा है सर, हम खाद, बिजली, अनाज सभी की रियायतें, मतलब सर सब्सिडीज को झटके से खत्म कर देंगे सर।

मि. एक्स : नो, नो अभी बहुत धीमा है। वैरी पुअर। वी स्टिक टू अवर रोड मैप, यू नो अवसर टाइम टेबल।

सेक्रेटरी : हम इस साली बिजली का कतई निजिकरण कर देंगे। मल्टीनेशनल को बेच देंगे सर। आप हमारी मदद कीजिए सर। चाहे सर बिजली की कुछ भी कीमत हो जाए सर। चाहे पूरे देश की बिजली गुल हो जाए सर। हम यह जरूर करेंगे सर।

मि. एक्सः (हंसकर) ओनली बिजली .....

मंत्री : नहीं सरकार, हम तो रेल भी बेच देंगे, सरकार। बड़ी अफरा–तफरी है।

मि. एक्सः हंसकर, अफरा–तफरी .....

मंत्री : और तेल भी

मि. एक्स : ओ.....ओ

सेक्रेटरी : और जेल भी....(एक्स का सहायक नोट कर रहा है।)

सब बारी–बारी से : खेत खलिहान, पहाड़ और खदान
हवा–पानी और आसमान
जर जंगल और ज़मीन, अस्पताल
यूनीवर्सिटी, बैंक और बीमा.....

मि.एक्स : वैरी, वैरी गुड... पर जल्दी करना होगा और पूरा करना होगा, सोचना है और क्या–क्या होने सकता है, क्या–क्या बेचने सकता है, कहां–कहां फारेन इन्वेटस्टमेंट होने सकता है, जो बेचेगा वो ही बचेगा, नहीं तो सम्हाल नहीं पाएगा, जल्दी करना है सोचना है और क्या–क्या होने सकता है।

मंत्री : कोई रोड़ा ही नहीं, सरकार हमने समझ लिया है, अब तो सब कुछ बेचना है, इसमें हमारा भी फायदा है, आपका भी फायदा है।

प्रमोटर, ब्रोकर : मैं तो कहूंगा पूरे देश का फायदा है, पूरी दुनिया का फायदा है।

सेक्रेटरी : हां सर विदेशी पूंजी आएगी तो स्वदेशी कंगाली दूर होगी।

प्रमोटर : क्यों नहीं कंगाली दूर होगी,पामाली दूरी होगी, बदहाली दूर होगी।

मंत्री : (नाचते हुए) चारों ओर खुशहाली ही खुशहाली।

प्रमोटर : (नाचते हुए) हरियाली ही हरियाली होगी।

मि. एक्स : पर आप लोग बहुत धीमा करता है। हमें बहुत शिकायत है। हार्ड डिसीजन्स लेने नहीं सकता। गर्वनैंस ठीक नहीं।

मंत्री : कुछ दिन और रुक जाइए सर, हमारा भी कुछ ध्यान करिए सरकार, ये सब कुछ बेच लें, कुछ धन्धा पानी हो जाए तो फिर आपको सरकार भी बेच देंगे, कुछ दिन और सर..... प्लीज सर.....

मि. एक्स : नो कुछ दिन ..... और न्यूक्लियर डील जल्दी करना है, हमारा सिक्योरिटी नेट में आना है। आर यू क्लीयर?

मि. एक्स और मुशर्रफ को भी बोला कैसा जनरल है जो गवर्नमैंट नहीं करने कसता। हमें नतीजा चाहिए।

मंत्रीः हां, सरकार वी अंडरस्टैण्ड, हम हार्ड डिसीजल लेंगे, आपको शिकायत नहीं होगी।

मंत्री : जी सरकार।

(मि. एक्स : सहायक से कुछ सलाह करता है, फिर प्रमोटर से कुछ कान में कहता है।)

प्रमोटर : सरकार खुश हुए, कहते हैं भारत सरकार को बहुत बड़ा, बहुत बड़ा .....

मंत्री : (और बड़ा हाथ बनाकर) इतना बड़ा

प्रमोटर : नहीं इससे भी बड़ा, बहुत–बहुत बड़ा उधार देंगे जिसका सूद पचास साल तक चुका सकते हो... सब खुशी से चीखते हैं, धन्य हैं–धन्य हैं उधारीकरण की जय हो निजीकरण की जय हो। विदेशी पूंजी की जय हो, स्वदेश का कल्याण हो, हमारे जंगल, पानी, समुद्र, खेत–खलिहान, पेड़–पौधों को कुशल संरक्षण मिले, गरीब–गुरबा को मोक्ष मिले,

मंत्री, सेक्रेटरी, ब्रोकर : देखा आखिर बन गया काम।

सभी : जय अमेरिका, जय श्री राम

मि. एक्स : बट लिसिन, आबादी कम करनी होगी, सूद चुकाना होगा, घाटा दूर करना होगा, रियायतें खत्म करनी होंगी। गैट–वैट, नाटो–वाटो, सीटी–बीटी सब कुछ करना होगा। हमारी सुरक्षा छतरी में आना होगा। नो पब्लिक सेक्टर, नो पापुलिज्म, कोई गड़बड़ नहीं, प्रोबल्म हो हमें बताओ, जितना चाहिए मदद ले जाओ।

तीसरा दृश्य

(मंत्री और उसके पांच मुंहलगे चमचे)

मंत्री : कहो कैसी रही.....

एकः तिवारी जी आपने तो नक्शा ही बदल डाला, कहे देते हैं इतिहास में आपका नाम जायेगा

दो : विदेशी मुद्रा का इतना बड़ा भण्डार

तीन : इतना पैसा, इतनी समृद्धि..... चार : इतना कर्जा इतनी सहायता....

चार : ठीक ही कहते थे देश को सोने की चिड़िया, अब पता चलता है

पांच : इतनी चौड़ी सड़कें, फ्लाई ओवर, स्विमिंग पूल, कैसिनो, डिज़नीलैण्ड एस्कोर्ट अपोलो क्या है जो हमारे पास नहीं है। और अब तो एटम बम भी है

एक : नई दिल्ली का एक इलाका पेरिस लगता है।

दो : और बंगलौर कैलीफोर्निया

तीन : और बम्बई हांगकांग

चार : कस्बों में चाऊमिन और मुगलई

पांच : शाही पुलाव, सुरमई और चम्पई/ एकः शाही कबाब और फ्रेंच टोस्ट
(चटखारे लेकर) हॉट डॉग और केन्टूकी फ्राईड चिकिन

दो : पेप्सी और कोका कोला

तीन : हेम्बर्गर और पीज़ा

मंत्री : (आंख बन्द कर) सब कुछ है प्रभु की कृपा का नतीजा।

चार : लंदन की जीन्स और जापान के जूते

पांच : फ्रांस की चॉकलेट और अमेरिका के आलू चिप्स।

एक : बच्चों के लिए लियो की बन्दूक का खिलौना

दो : कृष्ण कन्हैया के लिए साऊथ कोरिया का ओढ़ना और बिछौना

तीन : विश्व सुन्दरियां और ब्रह्माण्ड सुन्दरियां

चार : अजी, पटना सुन्दरी, लखनऊ सुन्दरी, जयपुर सुन्दरी, भोपाल सुन्दरी, बंगाल सुन्दरी।

पांच : और तो और झूमरी तलैया सुन्दरी

एक : डोमा जी उस्ताद और हाजी मस्तान

दो : जुआ घर और चकले/रंडियां और भड़वे

तीन : चंड मुंड मुस्टंडे

पांच : और एक से एक घोटाले

मंत्री जी : बस बस, मुझे पोदीने के पेड़ पर मत चढ़ाओ, ये सब उधारीकरण के ही मजे हैं साडे नाल रहोगे तो ऐश करोगे, बर्खुरदार (हंसता है) और देखो पैसा आ रहा है और खूब आ रहा है (आंख मारकर) जरा ढंग से खर्च करना है..... समझ गए ना और उपलब्धियों का जरा प्रचार भी हो....

पांचों : समझ गए सरकार, 21वीं शताब्दी में हमारे देश के महाशक्ति बनने के पूरे चांस बन रहे हैं।

चौथा दृश्य

(मैय्यत का खामोश दृश्य बीच में लाश गरीब किसान परिवार का दृश्य, औरतें–बूढ़ी और जवान मुमकिन हो तो एकाध छोटी बच्ची या गोद का बच्चा एकाध जवान लड़का, एक बूढ़ा कुल पांचेक लोग या कम भी हो सकते हैं। गहरे शोक में डूबे, चुप–चुप रुक–रुक कर कभी–कभी रोते या सुबकते हुए, अचानक एक–एक कर या दो–दो या तीन लोग और कुछ औरतें झुंड में या अकेली सब अलग–अलग दिशाओं से स्थल पर जमा होने शुरू होते हैं। सब खामोशी से आ आकर बैठ जाते है। उनके चेहरे पर वेदना, शोक और कहीं कहीं क्षोभ है। सारा दृश्य शोक और क्षोभ और तनाव की सघनता में बंधा हुआ है। कुछ पल बाद लाश उठाई जाती है, धीरे–धीरे, औरतों के रोने की (और एकाध जवान लड़के की) एक हृदय विदारक ध्वनि के बाद पूरी मय्यत खामोशी से धीरे–ध ीरे (बहुत धीरे–धीरे) मंच के चारों ओर बैठे दर्शकों के किनारे–किनारे गुजरती है लम्बी शवयात्रा का संकेत (जिसमें सभी कलाकारों को शरीक किया जा सकता है) पीछे–पीछे औरतों का सिलसिला भी दो चक्कर भी लगाये जा सकते हैं शवयात्रा के आगे या साथ एक (जालिम सिंह) और पीछे दो अगंभीर सिपाही, मंच के बीचों–बीच लाश उतारी जाती है जिसके चारों ओर लोग खड़े हैं सर झुकाये (दर्शको ंकी ओर पीठ है) कुछ सैंकड तक

कोरस : अमरीका का कर्ज़ खा कर मरा
तीसरी दुनियां का एक अधेड़ किसान
उसकी मेहनती सन्तानों, निश्चिन्त रहो
दिल्ली से ख़बर आई है
अभी और मिलेगा कर्ज़ हमें
और एक शानदार सशस्त्र सुरक्षा
जिससे चुका सको आराम से
तुम पिछले तमाम कर्ज़ों का सूद
धीरे–धीरे

पांचवां दृश्य

(मीटिंग का दृश्य धीरे–धीरे लोग जमा होते ग्रुप्स में बातें करते हुए आते हैं और अलग–अलग झुंडों में खड़े होकर कुछ देर बात करते हैं। बारी–बारी से एक–एक ग्रुप या सिर्फ एक ही में हो रही बातचीत दर्शकों को सुनाई जाती है। शेष ग्रुप बातचीत का मूक अभिनय करते रहेंगे।)

1.एक : बुरा हुआ, आत्महत्या न करनी थी, गये साल रामपत ने ऐसा ही किया।

दो : बच्चे हैं, बूढे मां–बाप हैं।

तीन : क्या करता बेचारा तीन लाख का कर्जा था

एक : बताया ट्रैक्टर की तो किश्तें उतार दी थीं

दो : कहां ऽ कुर्की का सम्मन आया पड़ा था

तीन : हद ही हो गई है अब तो

2. एक : पिछली बार मिला तो बोला विदेशी बीज–खाद लाया हूं, उपज बढ़ेगी, आंध्र में तजरबा करा है,

एक्सपोर्ट करूंगा नाज

दो : मूरख सुना नहीं ये विदेशी बीज चौपट कर रहा है, खेती को, दक्षिण में आप ही किसानों ने कपास की खेती फूंक दी।

तीन : धरती का नाश कर रहा है ये बीज सबसे बड़ी बात इस बीज से बीज कोई नहीं बनता। बांझ बीज है। सिंथेटिक बतावैं, उपज तो एक बै बढ़ जायै, पर कम्पनी से ही बार–बार खरीदना पड़ेगा।

एक : खाद भी नई चइये, विदेशी, महंगी है, नया बीज लो और नई खाद और हर बारी वहीं से और ज्यादा महंगी।

दो : नाश हो लिया

3. एक: नई खबर सुनी, जिस खातिर असल में मीटिंग बुलाई गई है

दो : क्या भाई

एक : केबिनेट ने फैसला ले लिया है, शामलाती ज़मीन और उससे लगती कई एकड़ फूड प्रोसेसिंग फैक्ट्री लगेगी और एक होटल खुलेगा अमरीका की कम्पनी है और ओबेराय का होटल देशी

दो : होटल का आड़ै के करना सै

तीन : अरे भाई, दिल्ली नजदीक है, समझते नहीं हो, नई–नई गाड़ियां ले के रईसजादे आयेंगे, सड़क का किनारा है, हाईवे पास में और दिल्ली वाला प्रदूषण नहीं।

दो : ये तो भाई, कोई नई होव दे

एक : कुछ करना ए पड़ैगा

(अचानक एक युवक आता है और सब को बैठने के लिए कहता है)

युवक : बैठ जाइये, शान्त हो जाइये, (कुछ पल बाद) देखिये, सुखबीर की मौत से हमारे दिल भारी हैं, सब जानते हैं कितना खुशमिजाज मिलनसार और मेहनती आदमी था, जो इसे आत्महत्या कहता है ग़लत कहता है, उसकी ज़मीन कुड़क करने आये थे पिछले साल रामपत ने ज़हर खाया आखिर किसलिए?

ये सरकार गरीब किसान को कंगाल करने पर तुली है, कह रहे हैं सब्सिडी खत्म करेंगे,यूरिया के दाम बढ़ गए, डीजल की कीमतें बढ़ गईं, पानी मिलता नहीं, बिजली मिलती नहीं, अभी बिजली की कीमतें बढ़ाई हैं, लफ्फाजी करते हैं, मुफ्त बिजली देंगे और एनरोन से सौदा करते हैं और कहते हैं कि तुमसे 6 रुपये यूनिट खरीदेंगे, सब्सिडी ये देंगे नहीं, किसान को कतई तबाह करने की योजना है। सिंथेटिक बीजों के आयात की अनुमति दे रहे हैं अब हम अपनी धरती में बांझ बीज बोयें अपनी धरती खराब करें और मल्टीनेशनल्स के बंधुआ बन जायें बिक जायें पंजाब ज्यादा दूर नहीं है वहां मल्टीनेशनल्स को जमीनें दे कर उनका पूरा इलाका बनाया गया है। वहीं के किसानों की उपज खरीदते हैं और फूड प्रोसेसिंग के नाम पर मनमानी मंहगी चीजें बनाते हैं। हमारा आलू 1 रुपया किलो और उनके पटेंटों चिप्स 300 रुपए किलो यहीं का माल, यहीं की मेहनत और विदेशी ठप्पा, हमीं खदीदार, मियां की जूती मियां के सर।

(एक बूढ़ा खड़ा होता है)

बूढ़ा : भाई, हम कट्ठे हो जां त किस बदेशी कम्पनी की हिम्मत है, कर्नाटक में तुम नै देखा नहीं, (ठीक बात है, ठीक बात है की आवाजें)

मास्टर जी : मैं तो न्यूं कहूं सूं कि इस सरकार नै शरम आनी चइये जय किसान का नारा लगाते हैं और अन्न पैदा करने वाले काश्तकार को भूखा मारते हैं।

युवक : (खड़ा होकर) एक बात और सुनी गई है कि केबिनेट में निर्णय हुआ है कि हमारी शामलाती जमीन और कुछ लगती हुई जमीन खरीदरकर यहां अमरीकी फूड प्रोसेसिंग फैक्ट्री डाली जाएगी और ओबेराय का पांच सितारा होटल बनायाजायेगा। इसके नतीजे अभी हम नहीं जानते लेकिन इतना बता दूं कि हमारा इलाका नरक बन जायेगा हां, बीच में स्वर्ग का एक द्वीप जरूर बन जायेगा जिसमें अजनबी फरिश्ते घूमा करेंगे। हमारी खेतियों पर कब्जे होंगे। हमें कहा जायेगा ये पैदा करो और ऐसे

पैदा करो। कुछ पैसे लो और खामोश रहो। धीरे–धीरे हमारा उजड़ना तय है। हमारी धरती पर लफंगे रईसजादों की ऐश गाहें बनेंगी और हमें कहा जायेगा कुछ पैसे लो और खामोश रहो। अगर ये सच है तो हमें .....

(ये सब नहीं चलेगा, हम मर नहीं गए हैं कीआवाजें)

खामोश हो जाइये हमने तय किया है कि एक संघर्ष समिति बनायें। 11 तारीख को जिला मुख्यालय पर मंत्री जी का प्रोग्राम है, वहां एक विरोध मार्च ले कर जायें और आगे का प्रोग्राम संघर्ष समिति बनाये। सारे गांवों को इकट्ठा करें। (सब हाथ उठा कर इसका अनुमोदन करते हैं।)

मैं मास्टर धनसिंह का नाम संघर्ष समिति के संयोजक के रूप में प्रस्तावित करता हूं और 11 लोगों की संघर्ष समिति हो।

(सब उठाकर इसका भी अनुमोदन करते हैं)

छठा दृश्य

(मंत्री जी रैस्ट हाउस में साथ में सैक्रेट्री, एकाध शंड–मुस्टंड, एकाध चमचा, एक गन मैन, युवक (प्रभात) को ले कर उसके पिता लालचन्द का प्रवेश)

मंत्री : आइये, आइये भाई लालचन्द जी आइये (युवक से) आओ, बेटे आओ, आ जाओ (पिता से) बड़े दिन में मिले....बड़े दिन में....याद है हम बचपन में एक साथ जोहड़ में नहाये हैं, इधर आइये, पास में, (नीचे बैठते पिता को जबरन अपने पास घसीट लेता है) क्या नाम है बेटे का? बैठो बेटे बैठ जाओ (युवक खड़ा रहता है)

पिता: जी, प्रभात है इसका नाम

मंत्री : बड़ा सुन्दर नाम है (युवक से) कहो हम से क्या शिकायत है, सुना है बहुत नाराज हो।

एक चमचा:सरकार, समचाणै के सुखबीर ने आत्महत्या कर ली, कर्जा बहुत हो गया था, कुर्की आ गई थी। (युवक जलती निगाहों से देखता है)

मंत्री : कुर्की! अरे इतना हो गया, हमें किसी ने बताया नहीं, (सैक्रेट्री से) क्यों खन्ना साहब हम कहां चले गए थे

सैकेट्री : सर, पिछले हफ्ते आप स्विटरजरलैंड गए थे और उससे पिछले हफ्ते होनोलूलू गांव के लिए शौचालयों की नई डिजाइन देखने।

मंत्री : हां, ये झमेले तो हैं ही, पर बताना तो चाहिए खैर, बेटा तुम बोलो, क्या शिकायत है हम से!

लालचन्द :थोड़ा गर्म खून है, सरकार, समझ जायेगा।

मंत्री : क्यों नहीं समझेगा, हमारे तो बेटे की तरह ही हुआ, दो बात कहेगा तो सुनेंगे....(युवक से) बोले बेटे

प्रभात : सुना है, आप गांव की शामलाती ज़मीन और साथ लगते खेतों को अमरीकी मल्टीनेशनल्स को दे रहे हैं और एक पांच सितारा होटल बना रहे हैं।

मंत्री : पहले तो बता दूं, यह मेरा नहीं केबिनेट का फैसला है फिर यह मेरा इलाका है, भाई इसके विकास के बारे में मैं नहीं तो कौन सोचेगा।

प्रभात : विकास के बारे में? या विनाश के बारे में?

मंत्री : अब तुम जो कहो, इससे पूरे इलाके का, बल्कि पूरे प्रांत का, मैं तो यहां तक कहूंगा कि पूरे देश का विकास होगा। फारेन इन्वेस्टमैंट होगा, तुम जैसे कितने ही युवकों को रोजगार मिलेगा। अरे, मैं तो भूल ही गया भाई लालचन्द इसे कोई नौकरी–वौकरी मिली कि नहीं। (लालचन्द सर हिला कर मना करते हैं।)

मंत्री : (स्वर में दुलार भर कर) अब यही तुम लोगों में खोट है, आखिर, मैं यहां किस लिए बैठा हूं। कभी तो बताया होता।

प्रभात : मतलब की बात कीजिए शामलाती जमीन सब की है गांव के गरीब उससे चारा–ईंधन लेते हैं ये सरकार की कब से हो गई।

मंत्री : अरे भाई सरकार भी तो सब की है हम कोई गैर हैं हम तो उस ज़मीन से गांव के कमजोर वर्ग के भाइयों को रिहाइशी प्लाट काट कर देने वाले थे, गांव से ही इसका विरोध हुआ, बोले यहां स्कूल बनेगा, दो साल से सुन रहा हूं। आज तक तो बना नहीं।

प्रभात : तो इसका मतलब आप इस ज़मीन को मल्टीनेशनल कम्पनी को सौंप देंगे? और जिनको बेदखल करेंगे वे कहां जायेंगे?

मंत्री : (हंसता है) कहां जायेंगे? अरे भाई, इसी धराधाम पर कहीं रहेंगे। (फिर हंसता है, युवक आहत होता है) अमरीकी कम्पनी को मुफ्त में थोड़े ही दे रहे हैं, पैसे लेंगे और वो पैसे प्रांत के विकास में ही खर्च होंगे न

प्रभात : हां, जैसे अब तक हुए हैं

मंत्री : (अनसुना करके) और देखो कोई बेदखल नहीं किया जा रहा, जमीनें लेंगे तो मुआवजे देंगे, और विश्वास दिलाता हूं ठीक ठाक देंगे।

प्रभात : वो तो आप हमेशा ठीक–ठाक देते रहे हैं; आलों का मुआवजा, बाढ का मुआवजा, सूखे का मुआवजा, आज तक मिल रहे हैं आपके मुआवजे। कितनी घोषणाएं आप कर चुके हैं। यानी आप लोगों को उजाड़ कर ही दम लेंगे। पांच सितारा होटल बनायेंगे फिर।

मंत्री : अब बेटे अविश्वास की तो कोई दवा है नहीं मेरे पास। कोई जर्बदस्ती थोड़े ही है। सब को मुआवजा मिलेगा और लोग राजी–खुशी ज़मीनें देंगे। क्योंकि लोग तो जानते हैं कि इसमें उनका भी भला है, इलाके का भी भला है। और पांच सितारा होटल क्या तुम्हें खा जायगा, गांव में रौनक ही रहेगी। पंजाब को देखो कितना आगे निकल गया–

प्रभात : हां, उनकी खेती मल्टीनेशनल के कब्जे में आने लगी है, कई फसलें पैदा होनी बंद हो जायेंगी, कई बीज ना पैद हो जायेंगे, टोमोटो कैचअप और पटेटो चिप्स, पेप्सी और केंटकी फ़ाइड चिकिन यही सब चाहते हैं न आप!

मंत्री : तो क्या बुरा है, बेटे, तुम तो नौजवान हो, इक्कीसवीं सदी का नौजवान 19वीं सदी के बूढ़े की तरह बात कर रहा है। लोगों को रोजगार मिलेगा, डियर

प्रभात : हमें मालूम है पंजाब में मल्टीनेशनल ने कितना रोजगार दिया है और क्या गुल खिलाये हैं।

मंत्री : (कुछ–कुछ उत्तेजित होते हुए) अब जब सब कुछ तुम्हें मालुम है तो बहस क्या करते हो। कुछ ठंडे दिमाग से काम लो और अपने साथियों को समझाओ।

(लालचन्द से :) इसका रोजगार–वोजगार लगवाओ भाई, या राजनीति में भेजने का इरादा है। कभी आना मेरा पास फुर्सत में।इसकी सोहबत कुछ अच्छी नहीं। मेरे बेटे की तरह है, इसलिए कहा–अब मुझे जाना है जरा अनाथाश्रम का उद्घाटन करना है, ठीक है अब जाओ, खुश रहो।

लालचन्द नमस्कार करके उठता है, दोनों जाते हैं।

सातवां दृश्य

मंत्री अकेला खर्राटे भर रहा है ; पास में एक संतरी प्ले कार्ड लिये सोता हुआ खड़ा है। या चारों ओर घूम रहा है। जिस पर बड़ा–बड़ा लिखा है सब कुछ बिक चुका है और मंत्री भी आराम फरमा रहे हैं। (इसकी अलग–अलग दो तख़्तियां भी बनाई जा सकती हैं)

(अचानक तेजी से बातें करते पांच–छह अमलदारों का प्रवेश। दो–दो तीन–तीन के समूहों में जिनमें नौकरशाह, पुलिस, सेना सभी हैं)

नौकरशाह : सर गजब हो गया उठिए सर (तेज खर्राटे)

सब बारी–बारी से उठिए सरकार, गजब हो जाएगा सरकार, उठ जाइये। मंत्री को उलट–पलट के, घूसे लगाकर, थपकियां देकर, गुदगुदी करके, पानी के छीटें मारकर जगाने की कोशिश की जाती है पर कामयाबी नहीं मिलती। उसे सभी मिलकर बिठाते हैं और नींद में ही खड़ा करते हैं, कान में जोर से चिल्लाते हैं उठ जाइये सरकार–मंत्री धीरे–धीरे होश में आता है।

मंत्री : क्या हुआ.....ये शोर कैसा है.....

सेक्रेटरी : गजब हो गया सरकार.....कल कारखाने बन्द हो गए हैं।

मंत्री : वो तो होने थे....

सेक्रेटरी : लोग छंटनी और तालाबंदी के बाद सड़क पर आ गए हैं।

मंत्री : हूं

सेक्रेटरी : बैंक–बीमा कर्मचारी उनमें शामिल हो गए हैं, बिजली कर्मचारी, जंगलात के कर्मचारी, खान मजदूर, अध्यापक, छात्र, मछुआरे, जुलाहे, मोची–दर्जी–पीर बावरची.....

मंत्री : (जोर से) हूं ऽ

सैक्रेटरी : किसानों ने विद्रोह कर दिया है सरकार, वे मरने–मारने पर उतारू हैं, ,खेतियां जला रहे हैं मल्टीनेशनल बीज कंपनियों के दफ्तरों पर धावा बोल रहे हैं.....

मंत्री : (जोर से) हूं ऽ

एक : उत्तर में अकाल पड़ा है।

दो : उत्तर पूर्व में आतंकवादी

तीन : दक्षिण में बंद

चार : पश्चिम में चक्का जाम

पांच : पूरब में आम हड़ताल

छह : राजधानी में हैजा सरकार

सात : भुखमरी....महंगाई

मंत्री : (कानों पर हाथ रखकर जोर से) चोऽप, चुप करो तुम सब, तुम सब क्या मर गये, फौज फर्राटा कहां है (चारों ओर देखते हुए)पुलिस कहां है, अफसर कहां हैं, आकाशवाणी और दूरदर्शन कहां है? कहां गए हमारे तोप–तमंचे, तलवार, अखबार, पत्रकार क्या सब मर गये। वो हमारी राजपूताना राइफल्स, वो गढ़वाल रेजीमेंट और जाट रेजीमेंट

दो : और सर सिख रैजीमेंट और डोगरा रैजीमैंट

मंत्री : वो हमारे कारगिल के तमाम शूरवीर।

कोई एक : वैसे तो सर हमारे पास एटम बम भी है पर वो तो सर पड़ौसी

मंत्री : चोऽप (सेक्रेटरी से) इतना हो गया और तुमने मुझे खबर करने की जरूरत नहीं समझी।

सेक्रेटरी : सर आप .....

मंत्री : चोऽप (फोन घुमाता है : हलो! हलो! कई नम्बर डायल कराता है....हलो हलो) मि. एक्स और स्वामी जी को जल्दी फोन लगाओ। सैक्रेट्री फोन मिलता है।

(तांत्रिक नुमा व्हीलर डीलर का दो लफंगो के साथ प्रवेश)

सब बैठते हैं–गुप्त बैठक होती है।

आठवां दृश्य

(एक लड़का और लड़की पर्चे बांटते हुए लोग अलग–अलग जैसे अपने घरों में, पर्चे गौर से पढ़ते हुए लोग और धीरे–धीरे एक जगह जमा होते हुए कुछ तख्तियां उठाते, पोस्टर चिपकाते महिलाएं, युवक–युवतियां, बूढे–बच्चे सब धीरे–धीरे दो–दो की लम्बी कतार बनाते (तख्तियों पर लिखने के लिए कुछ नारे तैयार करने होंगे) प्रभात, मास्टर धन सिंह, कुछ छात्र–छात्राएं ज्यादा पहल करते हुए, जालिम सिंह और उसके तीन चार सिपाही कुछ ढूंढते से लाठियां फटकारते, सीटी बजाते, आडिएंस की ओर मुंह करके ज्यादातर। यह खामोश दृश्य सूझबूझ के साथ बहुत सुन्दर ढंग से बन सकता है, इसमें गति, गतिविधि और फार्मेशन ही प्रमुख है। परचम का कोई गीत पृष्ठभूमि में कोरस में गाया जा सकता है)

एक किसान की लाश लाई जाती है (औरते भी हैं एक–एक कर संवाद बोलते हैं बातचीत के अंदाज में)

– क्यों ऐसा काम किया अब बच्चे रूलेंगे।
– अकेला मामला नहीं है। पूरे देश में हो रहा है। पचासों वे रो रही हैं कोई बड़ी मुसीबत आई है।
– 33 लाख का कर्जा था, क्या करता?
– इतना कर्जा क्यों भाई
– खाद बीज सब बदले दिये, बांझ बीज लाया था, विदेशों में फसल बेचने की सोची थी।
– फसल अच्छी हुई पर पर खरीद नहीं थी
– जिनसे नए खाद, बीज लिए थे उन्होंने ने भी नहीं खरीदी।
– अरे वो अपना माल बेचना चाहते थे। तुम्हारा माल खरीदना नहीं।
– झगड़ा ही सब मंडी का है।
– बेचारा जसबीर लालच में मारा गया।
– कर्जा ना लेता तो पचास साल और जीता।
– एक औरत लाश का चेहरा देखती है जोर से रोती है।

(सब खड़े होते हैं लाश ले जाते हैं)

(एक आदमकद पोस्टर लगा है जिस पर लिखा है बीज बचाओ, खेत को बचाओ, देश बचाओ लोग उसके इर्द–गिर्द इकट्ठे होते हैं, कानाफूसी शुरू होती है।)

एक : बिलायती कंपनी आ रही है न
दो : सुनते हैं उसमं ड्रॉप्सी तेल बनेगा।
तीन : बस सारी आबादी चौपट, खेती चौपट, अपाहित ही अपाहिज दिखाई देंगे।
– एक बिलायती कंपनी ने तो गैस से दस हजार लोग मार दिए।
– दस हजार, ना भाई इतने
– अरे कंपनी थी यूनियन कारबाइड रातों रात हजारों लोग बिछा दिए, जहरीली गैस छोड़ी थी। भोपाल में।
– अरे टैंक फटा था।
– तू तो ऐसे कहा रहा है जैसे वहीं हो।
– सब हल्के से हंसते हैं।
– वहां अब तक अपाहिज बच्चे पैदा हो रहे हैं।
– ये बिलायती कंपनी क्या चाहता है?
– हमारी तबाही और कच्चा माल।
– सुना है नीम बबुल करेला, जामुन, बैंगन, बामसती पर कब्जा कर लिया है।
– बासमती का कब्जा तो छूट गया
– कैसे छूटा भाई
– बस सारे गरीब देश इकट्ठे हो गए छुड़ा लिया।
– हजारे नेता तो सोते होंगे।
– बिलायती कंपनियों बिजली पानी पर भी कब्जा जमाने वाले हैं। बम्बई में आई है। एक, अरे अपने पानीपत में थर्मल प्लांट उन्होंने खरीद लिया।
– देखो बिजली पानी की दिक्कत कितनी बढ़ गई?

(सब लोग कानाफूसी करते हैं बीच में सुनाई पड़ता है)

– पानी गले से ऊपर पहुंच गया।

– भाई अंग्रेज एक कंपनी लाया था कितना खून पीया इन बिलायती कंपनियों को पैर मत जमाने दें।

(तभी एक लड़का एक लड़की आकर पर्चे बांटते हैं सभी लोग हाथ पकड़कर घूमते हुए सधी आवाज में कहते हैं)

ताश खेलना छोड़ो अपनी सोचो हाथ पकड़ो

डींग मारना छोड़ो साथ न छोड़ो अपनी सोचो।

(सभी बैठ जाते हैं। या गोले में हाथ पकड़े फ्रीज हो जाते हैं दूसरे ओर नेता, बीडीओ और चौधरी का प्रवेश)

नेताः चौधरी धनवीर आपके गांव में क्या हो रहा है? आग आस–पास फैलने लगी है। घर फूंक जायेगा चौधरी

चौधरी : साहब बात ये है कि एक बिरादरी एक तरफ, तो धनवीर के करै।

नेताः चौधरी दूसरी जबान बोल रहे हो। पेट्रोल पंप का ठेका, लोन, लीज की जमीन और वो ज्ञानी के कतल का मामला सब भूल गये क्या?

धनसिंहः भूलेंगे क्यों पर बात बिरादरी की है हम अलग खड़े नजर आए तो आपकी दाल नहीं गलेगी।

नेता : किसानों को हक तो हम भी देखते हैं।

धनसिंहः अब बात खुल गई है, लोग नहीं सुन रहे कल की मीटिंग बोल्या तो मुझे पर टूट कर पड़े मुश्किल से बात सम्भाली।

(कुछ खामोशी)

नेताः तुम छांटो चार आदमी, हम बुलाते हैं दिमाग के डाक्टर को, दिमाग पलटवाते हैं। नर्सों की हड़ताल में हमने किया था। चौधरी सब तरकीब खत्म नहीं होली।

(धनवीर चुप होकर सिर झुका लेता है नेता प्रश्नवाचक मुद्रा में उसकी तरफ देखता है–दोनों के बीच तनाव है फ्रीज हो जाते हैं लोगों का घेरा फिर सक्रिय है) जूलुस की सक्ल में गाते हैं–

तीकड़म है भई तीकड़म है

तिकड़म से गहरा जाल है

स्वदेशी नारा अमरीकी चाल है

देश को उजाड़ने का पूरा प्लान है।

रूककर संघर्ष की स्थिर फारमेशन बनाते हैं आगे बढ़कर मुट्ठी तानकर एक आदमी नारा लगाता है–बिलायती कंपनी छोड़ो देश

लोग जवाब देते हैं–हमारा देश हमारा देश।

●●●